द्वितीय अध्याय

" शंकर शेष के नाटकों में चित्रित नायिकाओं का स्वरूप "

द्वितीय अध्याय

``शंकर शेष के नाटकों में चित्रित नायिकाओं का स्वरुप ''

साहित्य की किसी भी विधा में किसी पात्र को केंद्र में रखकर कृति का निर्माण किया गया होतो वह प्रधानपात्र कहलता है। वह पात्र अगर पुरुष हो तो " **नायक** " कहलाता है और स्त्री हो तो "**नायिका**" कहलाती है। नायिकाओं के स्वरुप पर प्राचीन काल के आचार्य भरतमुनी से लेकर आधुनिक काल के आचार्यों तक कई लोंगो ने अपने अपने विचार प्रकट किए है। भारतीय आचार्यों के अनुसार नायक की पत्नी अथवा प्रिया नायिका कहलाती है। गुणों में वह नायक के तुल्य होनी चाहिए। नायिका की विभिन्न कोटियाँ निर्धारित की है। नायिका की सामाजिक प्रतिष्ठा, आचरण की पवित्रता अथवा अपवित्रता,कामदशा, आयु की विशेषता, आंतरिक प्रवृत्ति, अंगरचना आदि आधार पर विभिन्न भेद किए हैं। भरत की नाट्यकला का विवेचन करते हुए उनके द्वारा गृहित नायिका भेद के आधार निम्नलिखित है -

1. प्रकृति भेद	- उत्तमा, मध्यमा, अध्यमा।
2. आचरण की शुद्धता	- बाहया, आभ्यातंरा, बाहयभ्यतंरा।
3. सामाजिक प्रतिष्ठा	- दिव्या, नृपपत्नी, कुल स्त्री (गणिका)
4. कामदशा	- वासकसज्जा आदि।
5. शील	- धीरा, ललिता, उदात्ता, निभ्रता।
6. अंगरचना और अंतः प्रवृत्ति	- दिव्य सत्वा, मनुष्य सत्वा आदि।

भरतमुनि ने " नाट्यशास्त्र " के बाईसवें अध्याय में नायिकाओं के स्वरुप पर विस्तार से विवेचन किया है। उसमें मुख्य विषय के अतिरिक्त हाव -- भाव, मान -- मोचन के उपाय, दूती आदि प्रसंगो का भी विस्तृत वर्णन है। भरतमुनि के अनुसार प्रकृति के विचार से स्त्रियाँ तीन प्रकार की होती है --

1. उत्तमा -

यह प्रिय के समक्ष अप्रिय प्रसंग होने पर भी कुछ नहीं बोलती। बहुत देर तक रोष युक्त नहीं रहती। शील, शोभा, और कुल की उच्चता के कारण पुरुषों की कामना का लक्ष होती है। कला कुशल, कामतंत्र में निष्णात, दर्यादिल, रुपवती, ईर्ष्यारहित, परम रमणीय होती है।

2. मध्यमा -

पुरुषों की अभिलाषित तथा उनकी कामना करनेवाली, कामोपचार में कुशल, प्रतिपक्षियों से ईर्ष्या करनेवाली, क्षीण क्रोधवाली, अभिमानीनी लेकिन पल भर में खुश होनेवाली मध्यक श्रेणी की नारी होती है

3. अधमा -

बिना अवसर के क्रोध करनेवाली, दृष्टशीला, अतिमानीनी, चंचल, कठोर और देर तक क्रोध करनेवाली मध्यम श्रेणी की होती है ।

सबसे प्रमुख नायिका भेद प्रमुख रुप से तीन ही माने जाते है

1.स्वकीया।

2.परकीया।

3.सामान्य या साधारण स्त्री ।

1. स्वकीया नायिका -

यह नायिका नायक की पत्नी होती है। वह शीलवती एवम् सरलता से युक्त होती है। डॉ. पुष्पलता ने स्वकीया नायिका के संदर्भ में लिखा है, " बिहारी ने स्वकीया प्रेम पर कोटी अप्सराओं को न्योछावर कर दिया है। साहित्य में स्वकीया प्रेम को अधिक महत्व प्रदान किया है।"[1] यह नायिका उत्तम चरित्रवाली, पतिव्रता, महान अंतःकरणवाली, लज्जायुक्त एवम् पति के प्रति अपने व्यवहार में कुशल होती है । इस नायिका के तीन भेद बताये है ।

अ) मुग्धा ,ब) मध्या, क) प्रगल्भा।

अ) मुग्धा नायिका -

इस नायिका का ज्ञान रति के संबंध में सीमित होता है। कामकला के संबंधी ज्ञान में नवीना होती है। यदा कदा नायक के कुपित होने पर भी इसका स्वभाव यथावत् कोमल बना रहता है । मुग्धा नायिका के चार प्रकार हैं

1. वयोवृद्धा - [वय :संधि की अवस्थाकाली]

2. काममुग्धा - [कामभाव से अनयित अथवा भोली]

3. रतिकामा - [रति एवम् संभोग से डरनेवाली]

4.मृदुकोपना - [क्रोधित नहीं होनेवाली या होने पर तुरंत मान जानेवाली]

ब) मध्या नायिका -

चढ़ती जवानी की सब कामनाओं से भरी हुई और मूर्च्छा की अवस्था रति में समर्थ रहनेवाली नायिका को मध्या नायिका कहते है । इसके भी तीन भेद हैं ।

1. यौवनावती ।

2. कामवती ।

3. मोहान्त सुरत क्षमा ।

उपर्युक्त भेदों के अतिरिक्त मध्या नायिका के अन्य तीन भेद हैं जिनका निर्धारण नायक के साथ उनका होनेवाला व्यवहार होता है । वे भेद निम्नप्रकार से

1. मध्या धीरा -

अपने पति को अन्य स्त्री पर आसक्त जानकर मध्याधीरा नायिका अपने क्रोध को व्यंग्य द्वारा नायक पर प्रकट करती है।

2. मध्या अधीरा -

यह नायिका कटु उक्तियों द्वारा नायक पर अपना क्रोध प्रकट करती है।

3. मध्या धीरा अधीरा -

यह नायिका प्रिय से अप्रिय वचन न कहकर स्वभाव के द्वारा अपना क्रोध प्रकट करती है।

क) प्रगल्भा नायिका -

स्वकिया नायिका का तिसरा भेद है प्रगल्भा नायिका ।यह बड़ी ढ़ीठ, वाचाल एवम् लज्जाहीन होती है। रति के लिए वह इतनी आतुर होती है कि तुरंत वह प्रिय के सामने आत्मसमर्पण कर देती है। इसके तीन भेद होते हैं --

1] यौवन्नान्धा। 2] रुपरोन्मता 3] रति प्रगल्भा।

मध्या के समान प्रगल्भा के भी नायक के साथ उसके व्यवहार से तीन भेद होते हैं -

1. प्रगल्भा धीरा

यह अपने क्रोध को दो प्रकार से प्रकट करती है। या तो वह नायक के प्रति अतिशय आदर प्रकट करके उसे लज्जित करने का प्रयास करती है या रति क्रीड़ा में नायक का साथ न देकर उदासीनता प्रकट करती है।

2. प्रगल्भा अधीरा

यह नायिका पति को ताड़ना देकर अपना क्रोध प्रकट करती है।

3. प्रगल्भा धीरा-अधीरा :

यह नायिका अपने रोष को छीपा नहीं पाती । वह ऐसे वचन में बोलती है जिनका वाचार्थ तो डाँट फटकार परक नहीं होता किंतु उसमें रोष की व्यंजना अवश्य निकलती है। प्रगल्भा को ही "प्रौढ़ा " कहते है। वह रुपगर्विता होती है। उसे अपने सौंदर्य पर बड़ा गर्व होता है और उसी के बल पर वह अपने पती को अपनी ऊँगलियों पर नचाती है।

2. परकिया नायिका

परकिया नायिका किसी अन्य पुरुष की विवाहिता होती। गुप्त रुप से परपुरुष से संबंध स्थापित करनेवाली स्त्री परकिया नायिका कहलाती है। परकिया नायिका शास्त्रों में दो प्रकार की मानी गयी है कन्या और परोढ़ा। कन्या को परकिया माना जाता है क्योंकि उसका सम्मिलन स्वच्छंद नहीं होता। इसके साथ मेल -- जोल बुरा माना जाता है। इसको प्रेमकाव्य में स्वेच्छापूर्वक अंग तथा अंगी इन दोनों रुपों में रखा जाता है। परोढ़ा प्रेमशास्त्रविहित और लोकसंमत नहीं है। इसका प्रेम सदैव रसाभास का आलंबन होता है।इसके परंपरागत छ भेद हैं, जैसे :

1. गुप्ता नायिका :

यह नायिका पर पुरुषों के साथ अपनी रति को गुप्त रखती है और उसे छिपाने के लिए अनेक चेष्टाएँ करतो है।

2. विदग्धा :

यह नायिका पर - पुरुषानुराग का क्रिया एवम् चतुराई द्वारा संकेत करती है। इसके दो भेद है : वचन विदग्धा और क्रिया विदग्धा ।

3. लक्षिता :

यह नायिका पर पुरुषों के प्रति किये गये प्रेम को छिपा नहीं पाती ।उसका प्रेम सब पर प्रकट होता है ।

4. कुलटा :

' कुलटा ' वह स्त्री है जो पुरुषों के साथ अपनी रति की इच्छा दर्शाती है।

5. अनुशयना :

संकेत स्थल पर प्रेमी गया मगर मैं नहीं गयी ऐसा जानकर दुःखी होनेवाली नायिका अनुशयना कहलाती है।

6. मुदित नायिका :

जब नायिका रति क्रिडा के सुख प्राप्ति की संभावना में आनंदित होती है तब उसे मुदित नायिका कहते है।

3. सामान्य नायिका :

यह नायिका सबके लिए सर्वथा सहज उपलब्ध होती है।यह कुलशील रहित होती है। यह न तो दुष्ट से नफरत एवम् घृणा करती है और न गुणवान से प्रेम करती है। डॉ.सूरज कान्त शर्मा इसके बारे में लिखते हैं - " इसके चरित्र की अन्य विशेषता यह है कि यह मूर्ख, नपुंसक, या छिपकर काम तृप्ति करनेवाले व्यक्तियों से तब तक प्रेमव्यवहार रखती है, जब तक वे अर्थसंपन्न रहते हैं।" [2], अतः यह नायिका वेश्या होती है। अवस्था भेद के अनुसार स्वकीया, परकिया और सामान्य नायिका के आठ भेद है :-

1. स्वाधीन पतिका :

यह नायिका उस प्रकार की है जो चाहती है कि नायक हमेशा उसके अधीन रहें। यह नायिका प्रिय को प्राणों से प्यारी होती है।उसका दांपत्ति जीवन अत्यंत सुखमय, शांतीपूर्ण एवम् प्रसन्न रहता है।

2. वासक सज्जा :

यह नायिका अपने प्रियतम से मिलने के लिए शृंगार सज्जा में व्यस्त रहती है। वह अपने को नानाविध अंगारादि से प्रसाधित सुवासित करके सुंदरतम बनाये होती है। तथा शयनकक्ष को भी सुसज्जीत कर प्रिय के आने की प्रतिक्षा करती है ।

3. विरहोत्कंठिता :

नायक की उत्सुकतापूर्वक प्रतिक्षा करनेवाली नायिका को विरहोत्कंठिता कहते हैं । बेसब्री से प्रियतम का इंतजार करती है।ऐसी नायिकाओं की उद्विग्नता तब और बढ जाती है जब रात्रि के उत्तरार्ध में भी प्रिय नहीं आता।

4. खंड़िता नायिका :

प्रियतम के अन्य नायिका के साथ सहवास के कारण खिन्न मना नायिका खंड़िता कहलाती है। यह अत्यंत ईर्ष्यायुक्त होती है। प्रिय के व्यवहार एवं आचरण से उसका विश्वास खंड़ित हो जाता है।

5. कलहन्तरिता :

नायक के अनादर करने के पश्चात् स्वयं ही अपने व्यवहार पर पश्चाताप करनेवाली स्त्री कलहन्तरिता कहलाती है ।

6. प्रेषित पतिका :

अपने प्रियतम के वियोग से दुःखी होनेवाली नायिका को प्रेषित पतिका कहते है ।

7. विप्रलब्धा :

पूर्व निर्धारीत समय एवम् स्थान पर नायिका को बुलाकर खुद उस स्थान पर नायक न आने से जो दुःखी होती है उस नायिका को विप्रलब्धा कहते हैं ।

8. अभिसारिका :

यह नायिका स्वयं नायक से मिलने जाती है । ऐसी नायिका को ' अभिसारिका 'कहते हैं । यह दो प्रकार की होती है,'शुक्लाभिसारिका' और 'कृष्णाभिसारिका '। ' शुक्लाभिसारिका ' उसे कहते है जो चांदनी रात में सफेद लिबास पहनकर नायक के पास जाती है ।'कृष्णाभिसारिका' उसे कहते है जो कृष्णरात्री में काले वस्त्र पहनकर प्रियतम के पास जाती है।

स्वाधीनपतिका और वासकसज्जा हमेशा खुश रहती है । श्रृंगारिक क्रीड़ा में मग्न रहती है। शेष नायिका चिता, निःश्वास, आँसु, ग्लानी आदि से युक्त होती है ।

नायिकाओं के स्वरुप और भेद के बारे में प्राचीन काल से लेकर जितनी सारी मतप्रवृत्तीयाँ प्राप्त होती हैं उसके लिए कोई एक आधार नहीं है । सभी ने विभिन्न आधारों पर ये भेद किये हैं, जैसे -- जाति, कर्म, पति का प्रेम, वय,दशा,काल,मान,प्रकृति या गुण । नायिकाओं के स्वरुप के बारे में डॉ नगेन्द्र लिखते है --" नायिका भेद का विशाल भवन जिस मुलाधार पर खड़ा हुआ है उसमें अनेक प्रकार के समान --- असमान अवांतर आधारों की संसृष्टी है । जो कहीं सामाजिक संबंध, कहीं स्वभाव, कही मनोदशा, कहीं काम प्रवृत्ति, कही अभ्यंतर और शारीरिक प्रकृति, कहीं केवल नायक के प्रेम की न्यूनता अधिकता पर ही आश्रित है। इसमें कुछ आधार मुलगत और नितांत स्थुल है ।"[3]

अतः प्राचीन काल के नायिकाओं का स्वरुप और आधुनिक काल के हिंदी साहित्य में नायिकाओं का स्वरूप इसमें काफी परिवर्तन आया है। आधुनिक हिंदी नाटक साहित्य का क्षेत्र अत्यंत व्यापक बन गया है। ऐसी स्थिति में आधुनिक हिंदी नाटकों की नायिकाओं का स्वरूप प्राचीन काल की नायिकाओं के तुलना में बदल गया है। उसमें आधुनिकता दिखाई देती है। डॉ.शांति मलिक लिखती है - " वही व्यक्ति मुख्य पात्र बन सकता है जो नाटकीय कथा प्रवाह में योग दे।उसके लिए उच्च कुल से संबंधित होना अथवा सर्वगुणसंपन्न होना अनिवार्य नहीं है।" [4] आधुनिक हिंदी नाटको में केवल नायक की पत्नी या प्रेयसी नायिका ही नायिका नहीं कहलाती बल्कि उसकी बहन, माता या अन्य संबंधित नारी भी नाटक की नायिका कहलाती है जिसके ईर्द-- गिर्द सारा कथानक घूमता है तथा उसे उद्देश्य तक ले जाता है। उसका व्यक्तित्व सभी पात्रों में अधिक निखरा हुआ, आकर्षक एवम् प्रबल होता है। फलागम की स्थिति भी इसी नारी को प्राप्त होती है। अतः हम नाटक की नायिका को परिभाषाबद्ध नहीं कर सकते, फिर भी जो कथानक के विकासक्रम प्रमुख स्थान रखते हुए नाटक को फलागम की ओर ले जाती है, उसे नायिका कह सकते है। अगर नाटक नायकप्रधान है, तो उस नाटक के प्रमुख नारी पात्र को हम नायिका कह सकते है।

शंकर शेष के नाटक सामाजिक, राजनीतिक, पौराणिक, ऐतिहासिक होने के कारण उनके नाटकों के नायिकाओं के स्वरूप में विविधता नजर आती है। उनके कुछ नाटक नायिकाप्रधान हैं तो कुछ नायकप्रधान हैं। नायकप्रधान नाटकों के मुख्य स्त्री पात्र को हम नायिका कह सकते है। अतः शंकर शेष के नाटकों नें चित्रित नायिकाओं के स्वरूप को निम्नप्रकार से विश्लेषित किया गया है --

1. शैक्षिक स्वरूप : अ) अशिक्षित नायिका।
ब) शिक्षित नायिका।

2. वर्गीय स्वरूप : अ) उच्चवर्गीय नायिका ।
ब) मध्यवर्गीय नायिका ।
क) निम्नवर्गीय नायिका।

3. प्रेमिका स्वरूप : अ) सफल प्रेमिका।
ब) असफल प्रेमिका।

4. आर्थिक स्वरूप : अ) स्वावलंबी नायिका।
ब) परावलंबी नायिका।

2.1 नायिकाओं का स्वरूप - शैक्षिक स्वरूप :

साधारणतः नायिकाओं के शैक्षिक स्वरूप को ध्यान में रखकर हम उन्हें १) अशिक्षित नायिका, २) शिक्षित नायिका आदि में विभाजित कर सकते है। शंकर शेष के नाटकों की नायिकाएँ समाज के सभी वर्गों से संबंधित होने के कारण उनके कुछ नाटकों की नायिकाएँ अशिक्षित हैं तो कुछ नाटकों की नायिकाएँ शिक्षित हैं।

2:1:1 अशिक्षित नायिकाएँ :

समाज में कई ऐसे लोग हैं,जो बिल्कुल पढ़ --लिख नहीं सकते । जीवन में उन्हें कभी पाठशाला जाना नसीब नहीं होता । जो लोग बिल्कुल पढ़ -लिख नहीं सकते वह अशिक्षित कहलाते हैं । शंकर शेष के केवल दो नाटकों की नायिकाएँ अशिक्षित या अनपढ़ है।

शेष के **" बाढ़ का पानी "** नाटक की नायिका लछमी अशिक्षित है । लछमी का पति छीतू भी अशिक्षित हैं। वह जाति से चमार है। अशिक्षित होते हुए भी लछमी और छीतू भली भाँति जानते हैं कि पढ़ना लिखना कितना जरूरी है। इसी करण उन्होंने अपने इकलौते बेटे को पढ़ाया है। उनके गाँव में चमार जाति का नवल ऐसा लड़का है जो शिक्षित है । अतः लछमी अनपढ़ होते हुए भी शिक्षा का महत्व समझती है तथा अपने पढ़े-लिखे बेटे नवल पर बड़ा फक्र महसूस करती है ।

" पोस्टर " की नायिका चैती जंगल में रहनेवाले आदिवासियों में से एक है। वह आदिवासी मजदूर स्त्री तथा कल्लू की नई ब्याही हुई पत्नी है । वह अपने पति के साथ जमींदार पटेल के खेती - कारखाने में काम करती है । चैती अशिक्षित है मगर चालाक एवम् चतुर है। वह नाटक में महत्वपूर्ण स्थान रखती है क्योंकि उसके द्वारा कुतुहल वश मायके से लाया हुआ पोस्टर मालिक -- मजदूर संघर्ष का कारण बनता है । उस पर क्या छपा है बिना जाने वे अपने कारखाने में दीवार की सजावट के रूप में लगा देते है । जिससे उनकी मजदूरी एक रूपये से डेढ़ रूपये तक बढ जाती है । इस घटना के पश्चात पटेल अपना पैंतरा बदलता है । वह कल्लू को तरक्की देता है और मुकादम बनाता है तो उसकी पत्नी को हवेली की ड्यूटी पर लगाता है । चैती जानती है कि हवेली पर ड्यूटी करना मतलब पटेल की रखैल होना । पटेल ने जान बूझकर उसकी ड्यूटी हवेली पर लगायी है । चैती इसका विरोध कर हवेली जाने से इंकार कर देती है और पटेल से दुश्मनी मोल लेती है । चैती पटेल से बिल्कुल नहीं ड़रती । अतः चैती अशिक्षित होते हुए भी अपने अस्तित्व के प्रति सजग दिखाई देती है।

2:1:2 शिक्षित नायिका :

इसमें समाज के ऐसे लोग आते हैं, जो पढ़ लिख तो सकते ही है साथ ही उन्होंने शिक्षा ग्रहण कर कोई उपाधि भी पा ली होती है । शंकर शेष के अधिकतर नाटकों की ज्यादातर नायिकाएँ मध्यवर्ग एवम उच्चवर्ग से संबंध रखती है । जिससे उनके नाटकों की ज्यादातर नायिकाएँ शिक्षित हैं । उनके नाटकों की नायिकाएँ मुसीबतों से हार न मानकर उनसे जूझती हुई दिखाई देती है जो उनके शिक्षित होने का ही परिणाम है ।

शेष के " **मूर्तिकार** " नाटक की नायिका ललिता चित्रकार और मूर्तिकार शेखर की पत्नी है। शेखर उन मूर्तिकारों में से है जिसे जीवन में सुविधा पाने के लिए अपनी कला के साथ समझौता करना कतई मंजूर नहीं । जिस कारण उनके घर में धन की कमी है। यहाँ तक की चाय बनाने का भी सामान उनके घर में नहीं है । लेकिन शेखर का घर के हालत की तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं है । तब ललिता शेखर को अपनी जिम्मेदारियों से आगाह करते हुए कहती है --" अमर बनने के लिए क्या कुछ दिन जीना जरूरी नहीं है ? घर में तो दाना नहीं है । क्या मिट्टी के ढेले खाकर मूर्तियाँ बनाओगे ? "[5] तो दूसरी तरफ ललिता को लगता है कि गृहस्थी के जरूरतों के लिए अपने पति को उसके आदर्शों से नहीं गिराना चाहिए । तब वह कहती है कि " ------ पर अपने कलाकार का अभिमान कायम रखकर उससे अपनी आमदनी का इन्तजाम करो कि ------ यह घर चल सके ।"[6] इस तरह ललिता एक तरफ पति के कला के प्रति आदर्श और सिद्धांतो को समझती है, तो दूसरी तरफ गृहस्थी की जिम्मेदारियों को । अतः इन दोनों में वह ताल --मेल बैठाने के कोशिश में लगी हुई दिखाई देती है,जो उसके शिक्षित स्वरूप को प्रगट करता है ।

" **रत्नगर्भा** " की नायिका इला हार्ट स्पेशालिस्ट और प्रसिद्ध सर्जन डॉ.सुनील की पत्नी है। सुनील को इस ऊँचाई पर पहुँचाने का श्रेय इला को ही है, क्योंकि उसने अपने सारे गहने बेचकर सुनील को लंदन पढ़ाई के लिए भेजा था । वह पढ़ी-लिखी समझदार औरत होते हुए भी दुर्बलता से ग्रस्त है । क्योंकि एल दुर्घटना में इला कुरूप बन जाती है, तो सुनील उसकी पूर्णरूप से उपेक्षा करता है । पति के शराबी, वेश्यागामी, होनेपर भी उसकी निष्ठा विचलित नहीं होती है । मगर अपने पति को इस चारित्रिक पतन से इला सँभाल नहीं पाती । तब इला की बहन माया उसे कहती है -- " तुम पढ़ी-लिखी औरत हो दीदी । इस तरह भीख माँगना तुम्हें शोभा नहीं देता । उठो दीदी, लड़ना सीखो ।"[7] अतः यहाँ हमें इला पढ़ी-लिखी होते हुए भी परिस्थितियों से जुझने में कमजोर नजर आती है ।

" **नई सभ्यता के नये नमुने** " नाटक में दो नायिकाएँ है 'स्मृति' और ' धरणी '। 'स्मृति ' और ' धरणी ' उन्मुक्त जीवन जीनेवाली युवतीयाँ है । स्मृति आदर्शवाद की हिमायती बनी है तो धरणी

पाश्चात्य संस्कृति से बेहद प्रभावित है । आडंबरपूर्ण जीवन जीना इनका शौक है । स्मृति और धरणी कृष्ण से प्यार करती हैं, जो प्रेम, बलिदान, त्याग, जैसे वजनी शब्दों के जंजाल में फँसाकर उनसे रूपये ऐंठता है । दोनों भी कृष्ण के इस फरेब को नहीं पहचान पाती । उन्हें पता नहीं होता की कृष्ण दोनों से प्यार का झूठा नाटक कर उनसे पैसे ऐंठ रहा है । अतः स्मृति और धरणी बड़े बाप की ऐसी लडकियाँ है, जो शिक्षित होते हुए भी सही गलत की पहचान नहीं कर पाती ।

" **तिल का ताड़** " की नायिका मंजू बालविधवा है । वैधव्य के कारण मंजू अकेले ही जीवन का सामना कर रही है । लेकिन एक दिन जब अजय नाम के अनाथ लडके से उसकी मुलाकात होती है तो दोनों एक दूसरे का दुःख जानकर शादी कर लेते है । उनकी शादा-शुदा जिंदगी अच्छी चल रही होती है कि मजदूरों के आंदोलन में भाग लेने के कारण अजय पकड़ा जाता है । मंजू को बड़ी मुश्किल से मिला यह सहारा भी छीन जाता है । वह अकेली पड़ जाती है । पैसों की कमी उसे नौकरी करने के लिए मजबूर करती है। तब इन मुसीबतों से जुझती हुई मंजू नौकरी की तलाश में शहर पहुँच जाती है । अतः मंजू का पति जेल जाने पर अकेले रहना तथा नौकरी करने के लिए दूसरे शहर जाना उसके शिक्षित स्वरूप को प्रकट करता है ।

" **बिन बाती के दीप** " की नायिका विशाखा लेखिका है । विशाखा के लिखे उपन्यास लोगों में बहुत लोकप्रिय है । उसके लिखे उपन्यासों का अनुवाद सभी भारतीय भाषा में होता ही है, साथ ही फ्रेंच, अंग्रेजी, जर्मन और रशियन में भी हुआ है । विशाखा ने अंधी होते हुए भी अपनी शिक्षा का उपयोग साहित्य को और समृद्ध बनाने के लिए किया है । विशाखा पहले अंधी नहीं थी, लेकिन उसका पहला उपन्यास पूरा होते होते उसके आँखो की रोशनी चली जाती है ।

" **बंधन अपने - अपने** " की नायिका चेतना 28 वर्षीय युवती है । चेतना पिछले तीन वर्षो से डॉ.जयंत की मातहतो में अनुसंधान का कार्य कर रही है । वह उच्चशिक्षित तो है ही, साथ ही आत्मविश्वासी लड़की भी है । वह डॉ. जयंत के छोटे भाई अनादि से प्यार करती है । डॉ जयंत के प्रति चेतना के मन में नितांत आदरभाव है । आदर भाव से प्रेरित होकर ही वह बीमारी की हालत में जयंत की सेवा करती है । लेकिन डॉ.जयंत इसे चेतना का प्रेम समझकर उसके सामने पत्र लिखकर शादी का प्रस्ताव रखते है । जब यह बात अनादि को पता चलती है तो वह चेतना को अपने भाई से शादी करने के लिए कहता है । लेकिन चेतना यह प्रस्ताव को ठुकराते हुए अनादि से कहती है " ---- यदि प्रतिष्ठा, सामाजिक भय और उम्र की अधिकता डॉक्टर साहब के मन के बंधन है, तो अपनी गृहस्थी की कल्पना, अपना जीवन साथी चुनने का अधिकार अपनी उम्र के अनुसार सोचने और चाहने की इच्छा

भी मेरे मन के बंधन है । " [8] चेतना यह प्रस्ताव अस्वीकार करती है । जिस दृढ़ता के साथ चेतना यह निर्णय लेती है वह उसके शिक्षित होने का ही परिणाम है ।

" **खजुराहो का शिल्पी** " की नायिका अलका चंद्रात्रेय वंश के राजा यशोवर्मन की पालित कन्या है । राजा यशोवर्मन ने अलका को शास्त्र,संगीत और नृत्य की शिक्षा दी है । अलका इन तीनों कलाओ में पारंगत तो है ही वह और भी कलाओं को सीखना चाहती है । इसी कारण वह अपने पिता यशोवर्मन से कहती है -- " पिताजी, अब मैं चित्रकला और मूर्तिकला की शिक्षा पाना चाहती हूँ । " [9] अलका की सभी कलाओं में पारंगत होने की इच्छा उसने अब तक ग्रहण की हुई शिक्षा को ही प्रगट करती है ।

" **एक और द्रोणाचार्य** " दोहरे कथानकवाला नाटक है । इसकी आधुनिक कथा की नायिका प्रो.अरविंद की पत्नी लीला है तो पौराणिक कथा की नायिका गुरू द्रोणाचार्य की पत्नी कृपी है । लीला और कृपी दोनों भी अपनी अभावग्रस्त गृहस्थी चलाते -चलाते थक गई है । घर की दरिद्रता से परेशान कृपी द्रोणाचार्य को अपनी इच्छा पूर्ति के हेतु राजपुत्रों का आचार्य पद ग्रहण करने के लिए मजबूर करती है।तो दूसरी तरफ अरविंद अपनी पत्नी के आग्रह के कारण प्रोफेसर का प्रिंसिपल बन जाता है। लीला और कृपी शिक्षित है मगर सुविधा तथा सुरक्षा भोगी है । उनकी इसी प्रवृत्ति के कारण अच्छे - बुरे की पहचान होते हुए भी सुविधाओं को पाने के लिए दोनों अपने पतियों को उतार के रास्ते पर ले जाती हुई दिखाई देती हैं ।

" **कालजयी** " नाटक का राजा कालजयी एक ऐसा राजा है जो प्रजा पर अन्याय, अत्याचार कर अपनी सत्ता बनायें रखना चाहता है । कालजयी की निरंकुश सत्ता को उलटने के लिए राज्य में ' प्रजातंत्र ' दल का निर्माण हुआ है, जिसकी एक सदस्या पुरबी है । इस दल के सदस्य प्रजा में अपने स्वातंत्र्य के प्रति जागृति पैदा कर जनता का राज्य लाने के लिए प्रयत्नशील है । पुरबी इस नाटक की नायिका है । उस पर कालजयी के मृत्यु का रहस्य जानने की जिम्मेदारी सौंपी है । वह कालजयी के दरबार में न्याय की माँग करने के बहाने प्रवेश पाती है । और अपने सौंदर्यजाल में कालजयी जैसे धूर्त राजा को फाँसकर उसकी रानी बन जाती है । देश को निरंकुश राजा के हाथों से मुक्त करने के लिए पुरबी अपना सर्वस्व कालजयी को समर्पित करती है । इतना ही नहीं देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्रियकर वसुमित्र की जुबान काटकर उसका वध भी करती है । पुरबी द्वारा स्वाधीनता के लिए किए गए ये प्रयत्न उसके शिक्षित स्वरूप को प्रकट करते है ।

" **घरौंदा** "की नायिका छाया बंबई जैसे महानगर में चाल में रहनेवाली मध्यवर्गीय युवती है। जहाँ आम इंसान को रोज की जरूरतों को पूरा करने के लिए कमरतोड़ मेहनत करनी पड़ती है । घर के

ज्यादातर सदस्य नौकरी करते हैं । औरतें भी नौकरी या अन्य घरेलू काम-काज कर आर्थिक भार कुछ कम करने की कोशिश करती हैं । छाया भी पढ़ी - लिखी युवती है । छाया मोदी एंड कंपनी में नौकरी करने लगती है, जिससे घर के लिए कुछ आर्थिक मदद कर सके । अपनी आर्थिक स्थिति के प्रति सजग छाया और उसके द्‌वारा इस स्थिति को बेहतर बनाने के लिए किये जानेवाले प्रयत्न उसके शिक्षित विचारों का फल है ।

" **अरे ! मायावी सरोवर** " नाटक की नायिका सुजाता राजा इल्वलु की पत्नी है । राजा रोजमर्रा की जिंदगी से ऊब गया है । मगर रानी सुजाता को चूल्हा - चक्की, झाड़ू बर्तन, पूजा-अर्चा, भगवत दर्शन ' आदि से फुरसत ही नहीं । राजा के सामने यह समस्या है कि वह अब क्या करे ? तो रानी सुजाता उसे शबरीनरायन तीर्थ जाने की सलाह देती है । राजा रानी की सलाह मान लेता है, और रानी को लेकर वह शबरीनरायन तीर्थ चला जाता है । चलते चलते वे विचित्र वन पहुँचते हैं जहाँ की हर चीज विचित्र है । यहाँ कौए सफेद है, तो हंस काले । सिंह घास खाते हैं तो गाय मांस भक्षण करती है । इस विचित्रता को देख रानी चिंतित हो राजा को वापस चलने के लिए कहती है । लेकिन राजा मानता नहीं । वह ऐंद्रजालिक सरोवर में नहाने जाता है और स्त्री बन जाता है । स्त्री बना इल्वलु वापस चेतनानगर लौटना नहीं चाहता । अतः रानी को नगर वापिस अपने भेजकर अकेला वन में नारी रूप में चिंतन करने लगता है । राजा की अनुपस्थिति में रानी सुजाता राज्य का कार्यभार कुशलता से चलाती है । रानी सुजाता का कुशलता से राज्य कारभार सँभालना उसकी सक्षमता तथा उसके शिक्षित स्वरूप को प्रकट करता है ।

" **रक्तबीज** " नाटक के पूर्वार्ध की नायिका सुजाता मि. शर्मा की पत्नी है । सुजाता मालीश का तेल और दंतमंजन बनानेवाली कंपनी में काम करती है । अपनी सारी कमाई वह अपनी विधवा भाभी तथा उसके परिवार को भेजती है । इससे उसकी सहृयदयता का पता चलता है । बाद में वह अपने पति के ऑफीस में स्टेनो बन जाती है । इससे सुजाता का शिक्षित स्वरूप प्राप्त होता है ।

" **रक्तबीज** "के उत्तरार्ध घटना की नायिका ललिता मेधावी वैज्ञानिक डॉ.शंतनु की पत्नी है। डॉ.शंतनु ऐसा व्यक्ति है, जो अपने रिसर्च के जरिए दुनिया में नाम कमाना चाहता है । ललिता अपने पति की इस महत्वकांक्षा को जान उसका पूरा सहयोग देती है । वह खुद को पति की रिसर्च असिस्टंट मानती हैं । ललिता का पति के काम में सहयोग देना तथा समझदारी से काम लेना उसके शिक्षित रूप को प्रगट करता है ।

" **राक्षस** " की नायिका श्वेतादेवी है । श्वेतादेवी के नगर की तरफ राक्षस एक के बाद एक शहर तहस -नहस करता हुआ आ रहा है । एक तो राक्षस से मुकाबला अथवा उससे समझौता यही दो

उपाय उनके सामने है । आखिर गाँव के लोग समझौते का मार्ग अपनाते हैं । श्वेतादेवी उसका विरोध करती है । तो गाँव के लोग उसे ही पंचायत की अध्यक्षा घोषित करते हैं । तब श्वेतादेवी गाँव की नयी पीढ़ी याने बच्चों को राक्षस से बचाये रखती हैं। वह गाँव के युवको में संगठन निर्माण कर राक्षस के खिलाफ लड़ने के लिये प्रेरित करती हैं । जिससे वह राक्षस का प्रतिनिधि रणछोडदास को मोची के लडके द्वारा खत्म कराती हैं । निड़रता के साथ गाँव के बच्चों एवम् युवको में राक्षस के खिलाफ लड़ने के लिये किया गया संगठन श्वेतादेवी के शिक्षित स्वरूप को प्रकट करता है ।

" **चेहरे** " नाटक की नायिका अध्यापिका है । नाम से पता चलता है कि वह पढ़ाती है । अतः वह खुद तो शिक्षित है ही साथ ही समाजसुधारक भरोसे जी के आश्रम में अध्यापन का कार्य करती हैं।

" **कोमल गांधार** " की नायिका गांधारी, गांधार नरेश की पुत्री तथा धृतराष्ट्र की पत्नी है । गांधारी को धृतराष्ट्र के अंधेपन की खबर दिये बगैर धोखे से उसकी शादी धृतराष्ट्र से की जाती है । गांधारी नारी पर अन्याय करने की इस परंपरा को खंड़ित करना चाहती है । गांधारी आजन्म आँखों पर पट्टी बाँध लेती है । डॉ.रमेश गौतम गांधारी के बर्ताव पर प्रकाश ड़ालते हुए लिखते है " गांधारी में मनुष्योचित आक्रोश - भावना और प्रतिहिंसा फूटती है ।" [10] जिससे उसका संसार से ही विश्वास ऊठ जाता है । अपने पर हुए अन्याय का बोध तथा उसका गांधारी द्वारा किया गया तीखा विरोध उसका शिक्षित होना दर्शाता है ।

2:2 नायिकाओं का स्वरूप : वर्गीय स्वरूप :

समाज की जब से उत्पति हुई है, तब से ही समाज अनेक प्रकार के वर्गो में बँटा हुआ दिखाई देता है । यह परंपरा युगों-युगों से निरंतर चली आयी है । समाज के लोगों का यह वर्गीकरण ज्यादातर आर्थिक दृष्टि को ध्यान में रखकर किया जाता हैं । डॉ.अर्जुन चव्हाण लिखते है, " वर्तमान भारतीय समाज में आर्थिक दृष्टि से उच्च,मध्य और निम्न ये तीन वर्ग मिलते हैं ।"[11] समाज के जो लोग अत्यंत धनी होते हैं , वे उच्च वर्ग के कहलाते हैं । तो समाज के जो लोग अत्यंत गरीब होते हैं, जिनका जीवन स्तर सामान्य जीवन स्तर से भी हीन स्तर होता हैं वह निम्न वर्ग के लोग कहलाते हैं । आधुनिक समाज भी इन्हीं वर्गो में विभाजित हुआ है । समाज में एक वर्ग के लोग ऐसे भी हैं जो न अत्यंत धनी होते हैं , न गरीब होते हैं उन्हें मध्य वर्ग के लोग कहलाया जाता हैं । समाज के वर्गीय विभाजन पर विचार करते हुए डॉ.वीणा गौतम कहती है--" आधुनिक समाज में स्पष्ट रूप से तीन वर्गों की स्थिति दृढ़ से दृढ़तर होती जा रही हैं। अतःआज समाज में इन तीनों वर्गों को क्रमशःउच्चवर्ग , मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग की संज्ञा से अभिहित किया जाना स्वीकार कर लिया हैं ।"[12] अतः आधुनिक समाज में तीन वर्ग प्राप्त होते हैं -उच्चवर्ग ,मध्यवर्ग और निम्नवर्ग ।

शंकर शेष की नाटकों की नायिकाओं का वर्गीय स्वरूप भी - उच्चवर्गीय,मध्यवर्गीय, और निम्नवर्गीय इन तीन वर्गो में विश्लेषित किया गया हैं ।

2:2:1 उच्चवर्गीय नायिका :

उच्च वर्ग में समाज के अत्यंत धनी एवम् समृद्ध लोगों का समावेश होता हैं । समाज में इस वर्ग के लोगों की संख्या मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय लोगों की अपेक्षा से कम होती हैं । लेकिन यही वर्ग मध्यवर्ग तथा निम्न वर्गों के लोगों का शोषण कर और अधिक धन पाने की लालसा रखता है । आर्थिक दृष्टी से इस वर्ग के लोग अत्यंत समृद्ध होकर भी अधिक अर्थ प्राप्ति की कामना रखते हैं । इस वर्ग में समाज के जो लोग आते हैं, इसके बारे में डॉक्टर वीणा गौतम लिखती हैं - " उच्च वर्ग में राष्ट्र के सर्वोच्च प्रशासक अथवा अधिकारी तथा राजा,राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा सर्वाधिक धनी उद्योगपतियों को सम्मिलित किया जा सकता हैं।"[13] इस वर्ग में शंकर शेष के नाटकों की उन्हीं नायकाओं को लिया गया हैं, जो आर्थिक दृष्टी से समृद्ध एवम् संपन्न हैं ।

" नई सभ्यता के नये नमुने " की नायिकाएँ स्मृति एवम् धरणी दोनों सगी बहनें हैं । वह काला बाजारी करके धन कमानेवाले लखपति व्यापारी की बेटियाँ हैं । धरणी को क्लब में जाना, डिस्को -डान्स करना, रात देर तक जागना सुबह देर से उठना अच्छा लगता है।इसे वह "अल्ट्रा मॉडर्न " समझती है । स्मृति भी इसकी हिमायती है । अतः स्मृति और धरणी दोनों भी अमीर बाप की ऐसी बेटियों के रुप में हमारे सामने आती हैं, जो जीवन की सच्चाई से दूर अपनी ही दुनिया में मस्त हैं।

" बिन बाती के दीप " की नायिका विशाखा अंधी मगर अत्यंत प्रतिभाशाली लेखिका और शिवराज की पत्नी है । शिवराज खुद प्रसिद्धि पाने के लिए विशाखा से विश्वासघात करता है । विशाखा द्वारा लिखे मगर शिवराज के नाम से छपवाये गए उपन्यास लोगों द्वारा बेहद पसंद किए जाते है। उसके उपन्यास की इतनी माँग है कि अभी जो उपन्यास लिखकर पूरा भी नहीं हुआ है, उसकी पाँच हजार प्रतियाँ पहले से ही बुक हो जाती है । विशाखा एक सफल साहित्यिका है । इसी कारण उन्हें पैसों की कुछ कमी नहीं है । उसके घर में वो सभी सुविधाएँ मौजूद हैं, जो उच्चवर्ग के लोगों के घरों में होती है ।

" खजुराहो का शिल्पी " की नायिका अलका चंद्रात्रेय वंश के राजा यशोवर्मन की पालित कन्या है राजा यशोवर्मन और रानी पुष्पा उसे अपनी सगी बेटी जैसा ही प्यार करते हैं । अलका शास्त्र, संगीत, और नृत्य कला में निपुण है । अतः अलका एक राजकुमारी है, जो बचपन से ही राजसिक वैभव में पली- बड़ी है ।

"अरे ! मायावी सरोवर " की नायिका रानी सुजाता चेतनानगर के राजा इल्वलु की पत्नी है। रानी होने के नाते उसके पास हर प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध है । रानी सुजाता ने अपने जीवन का हर क्षण सार्थकता में जीया है । वह अपने घर- गृहस्थी में इतनी मशगूल है कि दूसरी तरफ देखने के लिए भी उसे फुरसत नहीं । रानी सुजाता के पास धन, दौलत, शोहरत, पैसा सबकुछ है, जो उसके उच्चवर्ग को दर्शाता है ।

" कोमल गांधार " की नायिका गांधारी गांधार नरेश की पुत्री तथा हस्तिनापुर राज्य के राजकुमार धृतराष्ट्र की पत्नी है। गांधारी ऐसे राजघराणे की बहु है, जिसके वैभव, कीर्ती और शौर्य के चर्चे दूर-दूर तक फैले हैं । अतः गांधारी उच्चवर्ग में स्थान रखती है ।

2:2:2 मध्यवर्गीय नायिका :

मध्यवर्ग में समाज के वे लोग आते हैं, जो न ज्यादा धनी है न ही कंगाल । इस वर्ग के लोगों की संख्या उच्चवर्ग और निम्नवर्ग की तुलना में अधिक है । इस वर्ग के लोग समाज के रीति - रिवाज और मूल्यों में विश्वास रखनेवाले होते हैं । मगर मध्यवर्गीय लोगों मे उच्चवर्ग में जाने की प्रबल इच्छा होती है और इसके लिए वे हमेशा प्रयत्नशील रहते हैं । इस वर्ग में शिक्षित, बुद्धिजीवी, सफेदपोश, माहवारी वेतनभोगी कर्मचारी आते हैं । इस वर्ग की स्थिति एक तरफ भारतीय संस्कृति से जुड़ी हुई, तो दूसरी तरफ पाश्चात्य और आधुनिक संस्कृति का आकर्षण आदि में जकड़ी हुई दिखाई देती है । इसके बारे में डॉ. श्रीमती मीना पिंपलापुरे लिखती हैं - " उसमें परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व है । वह आधुनिक होने की बात तो करता है, पर परंपरा से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाता ।[14] फिर भी मध्यवर्गीय लोग उच्चवर्गीय और निम्नवर्गीय लोगों की अपेक्षा अधिक सुखमय जीवन बिताने में सफल होते है ।

" मूर्तिकार " की नायिका ललिता का पति शेखर मूर्तिकार और चित्रकार है । मिट्टी को आकार और सौंदर्य देने वाला, मिटटी में कला से प्राण फुँकनेवाला मूर्तिकार अपने परिवार के लिए दो जून का भोजन जुटाने में भी असमर्थ है क्योंकि जीवन में सुविधाएँ पाने के लिए कला से समझौता करना शेखर को कतई पसंद नहीं । जिससे ललिता के घर में धन की कमी है । फिर भी वह अभावग्रस्त गृहस्थी बड़ी कुशलता और सहनशीलता से चलाती है । अभावों के कारण अपने पति को परेशानी ना उठानी पड़े ऐसी ललिता कामना करती है । अतः ललिता ऐसे मध्यवर्गीय पति की पत्नी है, जो नैतिक दृष्टि से अपनी जरूरतों को पूरा करने में विश्वास रखती है ।

" रत्नगर्भा " की नायिका इला सुनील की पत्नी है । सुनील की लंदन उच्च शिक्षा के लिए जाने की इच्छा है । अपने पति की इस इच्छा को इला पूरा करना चाहती है । लेकिन इतने पैसों का

इंतजाम करना जब इला को मुश्किल प्रतित होता है, तब इला अपने सारे गहने बेचकर पैसों का इंतजाम करती है । तथा अपने पति सुनील को पढाई के लिए लंदन भेजती है । इससे ही पता चलता है की इला मध्यवर्ग से ताल्लुक रखती है ।

" तिल का ताड़ " की मंजू अजय की पत्नी है, जो मिल में काम करता है । अजय की कमाई पर उनके घर का खर्च चलता है । एक दिन मजदूर आंदोलन में भाग लेने के कारण अजय पकड़ा जाता है, तो मंजू आर्थिक मुसीबतों में फँस जाती है । आर्थिक स्थिति से मजबूर होकर मंजू को नौकरी की तलाश करनी पड़ती है । इसी सिलसिले में वह शहर पहुँच जाती है जहाँ वह गुंड़ों के हाथ पड़ जाती है मगर प्राणनाथ नामक युवक उसे गुंड़ों से बचाता है । प्राणनाथ उसे अपने घर में रहने के लिए आश्रय देता है । मगर इसके बदले वह मंजू को उसकी पत्नी होने का नाटक करने के लिए कहता है । क्योंकि उसने किराये पर घर लेते वक्त घर मालिक से झूठ बोला था कि वह शादी-शुदा है । अतः आर्थिक संकटो में फँसी मंजू परिस्थिति से मजबूर होकर यह नाटक करने के लिए तैयार होती है ।

" बंधन अपने अपने " की नायिका चेतना डॉ जयंत के निर्देशन में अनुसंधान का कार्य कर रही है । अतः डॉ जयंत के घर उसका आना जाना होता है। वही उसकी मुलाकात डॉ.जयंत के छोटे भाई अनादि से होती है और दोनों में प्रेम हो जाता है । मध्यवर्ग में अक्सर देखा जाता है कि लड़कियों की शादी ठीक समय और उम्र में हो जाये इस तरफ माता पिता का ध्यान जरूर रहता है । चेतना को भी यह बात सही लगती है क्योंकि वह भी चाहती है कि अब उसकी शादी अनादि के साथ जल्द हो जाये और वह अपना घर संसार बसाएँ । जिससे उसने अपने घर संसार के प्रति जो सपने देखे है वह सच हो जाये । यहाँ चेतना के अपने घर के प्रति वही छोटे छोटे सपने दिखाई देते है, जिसमें मध्यवर्ग के लोग अपने जीवन की सार्थकता महसूस करते है।

" एक और द्रोणाचार्य " की नायिकाएँ लीला और कृपी दोनों मध्यवर्गीय है । लीला के पति अरविन्द कॉलेज में पढ़ाते है । घर खर्च चलाने के साथ ही कैंसर से पीड़ित माँ का इलाज, विधवा बहन की आर्थिक सहायता के लिए उसे पैसे भेजना तथा लड़के को मेडिकल कॉलेज भेजने की ख्वाईश आदि जिम्मेदारियाँ अरविंद पर है । लीला की गृहस्थी आर्थिक संकटो में फँसी दिखाई देती है । इस आर्थिक समस्या से लीला उपर उठना चाहती है । तो वह अपने पति को सुविधाभोगी बनने के लिए प्रवृत्त करती है । चाहे उसके लिए आदर्शों से गिरकर समझौता ही क्यों ना करना पड़े ।

दूसरी तरफ द्रोणाचार्य की पत्नी कृपी भी अपनी आर्थिक अभाव से ऊब गयी है । जब उसका बेटा अश्वत्थामा दूध पीने के लिए माँगता है तब कृपी आटे का घोल बनाकर दूध कहकर अश्वत्थामा को देती है । क्योंकि कृपी का पति - द्रोणाचार्य अपने समस्त पांडित्य और कौशल्य के बावजूद गृहस्थी

13840 A

चलाने, रोटी,कपड़ा और मकान जैसी जीवन की न्यूनतम जरूरतों को पूरा करने में असमर्थ है । कृपी इससे छुटकारा पाना चाहती है । वह गुरू द्रोणाचार्य को भीष्म द्वारा आये हुए राजगुरू पद के प्रस्ताव को ग्रहण करने के लिए कहती है ।

अतः यहाँ नजर आता है कि, लीला और कृपी दोनों भी अपनी आर्थिक स्थिति से संतुष्ट नहीं है और इससे ऊपर उठने के लिए अपने पतियों को सत्ता के हाथों बिकने के लिए मजबूर करती है जिसे दोनों जीवन जीने के लिए किया गया समझौता मात्र मानती है ।

" **कालजयी**" की नायिका पुरबी " प्रजातंत्र " दल की सदस्या है, जो कालजयी जैसे क्रूर, अन्यायी, अत्याचारी राजा की सत्ता को खत्म करने के लिए निर्माण हुआ है । पुरबी को कालजयी के मृत्यु का रहस्य जानने की जिम्मेदारी सौंपी है । पुरबी अत्यंत रूपवती और सौंदर्यवती होने के कारण कालजयी उसे देखते ही मोहीत हो जाता है । पुरबी को पाने की लालसा उसके मन में उत्पन्न होती है । वह पुरबी को पाने की इच्छा से उसे कहता है -- " पर वर कुछ नहीं, मैं घोषणा करता हूँ कि महारानी मंदारमाला के रिक्त स्थान पर तुम्हें महारानी बनाता हूँ । " [15] इस तरह पुरबी महाराज कालजयी की रानी बन उच्चवर्ग की हो जाती है । लेकिन जब कालजयी के मृत्यु का रहस्य पता चलता है और उसे मौत के घाट उतार दिया जाता है तब वह रानी पद तथा राज वैभव सब छोड़ देती है । अतः पुरबी मध्यवर्गीय नायिका है ।

" **घरौंदा** " की नायिका छाया का परिवार बंबई जैसे महानगर में एक ही कमरे में रहता है । उनके घर में छह सदस्य है । छाया पढ़ी लिखी युवती है । वह अपने घर के हालात से भली भाँति परिचित है । अतः घर के हालात सुधरने के लिए वह मोदी एंड कंपनी में टाईपिस्ट की नौकरी करती है । उसे अपने जीवन मूल्यों से प्यार है । अतः जिंदगी में आनेवाले मुसीबतों से लड़ते हुए जीना छाया के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है । तभी वह अपनी तरफ से बेहतर जीवन जीने के लिए कोशिश करती हुई दिखाई देती है ।

" **रक्तबीज** " के पूर्वाद्र्ध की नायिका सुजाता मध्यवर्गीय मि.शर्मा की पत्नी है । अपने पति के हर सुख- दुख में साथ देना वह अपना कर्तव्य मानती है । घर की आर्थिक स्थिति तथा अपने विधवा भाभी और उसके बच्चों की जरूरतों को भलीभाँति समझती है । उनको मदद करने की दृष्टि से वह " मालिश का तेल और दंतमंजन " बनानेवाली कंपनी में नौकरी करती है । फिर भी सुजाता अपनी इस गृहस्थी से खुश है । " रक्तबीज " के उत्तराद्र्ध की नायिका ललिता मेधावी वैज्ञानिक डॉ शंतनु की पत्नी है । डॉ शंतनु एक रिसर्च संस्था में ज्युनियर साइंटिस्ट के रूप में काम करता है । शंतनु अपने रिसर्च के जरिए दुनिया भर में नाम कमाना चाहता है । अपने पति की मनोकामना को जान ललिता

उसका पूरा सहयोग देती है । अपने पति की हर इच्छा को पूरा करना तथा उसके काम में हर तरह से मदद करना इसमें वह अपने जीवन की सार्थकता महसूस करती है । अत : ललिता ऐसी मध्यवर्गीय स्त्री है जिसकी खुशी , कामना, इच्छा, सब पति से जुड़ी हुई है ।

" **राक्षस** " की नायिका श्वेतादेवी दो हजार बस्तीवाले गाँव में रहती है । श्वेतादेवी पढ़ी लिखी है और गाँव में अध्यापन का कार्य करती है।वह गाँव पर आये संकट को अपना संकट मानती है। इसी कारण राक्षस से गाँव के लोगों को बचाने के लिए उससे लड़ने के लिए प्रेरित करती है । जब पंचायत के सदस्य और बच्चों के सिवाय गाँव का अन्य कोई नहीं बचता तब श्वेतादेवी गाँव के बच्चों में संगठन निर्माण कर राक्षस से लड़ना सिखाती है । जिससे बच्चों में भी साहस और उत्साह निर्माण होता है और वह राक्षस के प्रतिनिधि रणछोडदास को खत्म करते है। अतः श्वेतादेवी मध्यवर्ग की ऐसी स्त्री की भूमिका निभाती है,जो जीवन में आनेवाली मुसीबतों का मुकाबला करने में विश्वास रखती हैं।

" **चेहरे** " नाटक की नायिका अध्यापिका अपनी जीविका चलाने के लिए वेश्या व्यवसाय किया करती थी । पर जब उसे समाजसुधारक भरोसे जी का साथ मिलता है, तो यह सब छोड़कर वह उनके साथ निकल पड़ती है । इतना ही नहीं अपने सारे गहने, पैसे भरोसे जी को आश्रम और स्कूल खोलने के लिए देती है । वे दोनों संकल्प करते है कि आगे की जिंदगी दूसरों के लिए जियेंगे । इस में अध्यापिका पूरी खरी उतरती है । वह भरोसे जी के आश्रम और स्कूल में अध्यापन का कार्य करने लगती है । जब भरोसे जी उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखते है तो वह भरोसे जी को इसलिए इंकार करती है क्योंकि उसकी बीती हुई जिंदगी के कारण उनकी प्रतिमा को धक्का ना पहुँचे । अतः अध्यापिका मध्यवर्ग की ऐसी स्त्री है जो जीवन मूल्यों में विश्वास रखती है तथा उसे निभाना अपना फर्ज़ समझती है ।

2:2:3 निम्नवर्गीय नायिकाएँ :

निम्न वर्ग में वे लोग आते है जो अत्यंत गरीब होते हैं, जिनके पास जीविका चलाने के लिए मेहनत करने के सिवाय कोई साधन उपलब्ध नहीं होता । इनके सामने हर रोज रोजी-रोटी की समस्या खड़ी होती है । जिंदगी की मूलभूत जरूरतें भी ये पूरी नहीं कर पाते । उनके बारे में डॉ.चमनलाल गुप्ता कहते हैं --" समाज के कमजोर तथा पिछड़े वर्गों का शोषण आर्थिक कारणों से भी प्रायः होता है ।" [16] लेकिन इस अन्याय की भी पहचान इन लोगों में नहीं होती ।"इन लोगों को ना सुविधाएँ मिल पाती हैं ना ही शिक्षा । जिस कारण वे कभी अपने अधिकारों के प्रति सजग ही नहीं होते ।"[17] अतः निम्नवर्गीय लोग सामान्य जीवन स्तर से भी हीनतर स्थिति में जीते हुए दिखाई देते हैं ।

शेष के " **बाढ़ का पानी** " नाटक की नायिका लछमी जाति से चमार है । नर्मदा के किनारे बसे उसके गाँव में बारिश के कारण बाढ़ आने का खतरा पैदा हो गया है । उनकी झोंपड़ी गाँव के बाहर ऊँचे

टीले पर है क्योंकि वह अछूत है।तीन दिन से लगातार वर्षा हो रही है,जो रूकने का नाम ही नहीं ले रही। बारिश के वजह से धोए हुए कपडे भी सुखे नहीं हैं । लछमी का पति छीतू स्नान करने बाद जब धोती माँगता है तो लछमी उसे कहती है --" धोती सुखी नहीं तो क्या करू ? - अब दूसरी धोती लाऊँ कहाँ से ?- -- " [18] लछमी के घर में दो जोड़ी कपडे की भी कमी है । इसी कारण बारिश में भीगने के कारण गीले हुए कपडे. के बदले सूखे कपडे.पहनने का भी अभाव है । लछमी के घर की इस स्थिति से उसके निम्नवर्गीय होने का पता चलता है ।

शेष के " **पोस्टर** " नाटक की नायिका चैती कल्लू की नवविवाहिता है । चैती और कल्लू जमींदार पटेल के खेती--कारखाने में मजदूरी करते हैं । वहाँ उन्हें रोजाना एक रूपया मजदूरी मिलती है। उसीसे ही वह अपनी जीविका चलाते है । लेकिन एक बार चैती अपने मायके से एक ' पोस्टर ' लाती है और उस्से सारा चित्र ही पलट जाता है । अनपढ़ मजदूर अपने अधिकारों के प्रति ना सजग है ना ही अपने पर हो रहे अन्याय का उन्हें पता है । पटेल उन्हें कम मजदूरी देकर उनसे ज्यादा काम करवाकर हजारों रूप्यों का मुनफा कमाता है । इससे वे बिल्कुल अनभिज्ञ है । पर जब चैती द्वारा लाया पोस्टर पटेल को खुश करने के लिए मजदूर लोग दीवार पर चिपकाते है, तो पटेल उसे देखकर आग बबूला हो जाता है । पटेल मजदूरों से पोस्टर कौन लाया पूछता है । लेकिन मजदूर घबराकर जवाब नहीं देते । आतंकित मजदूरों की खामोशी को ही उनकी हड़ताल समझकर पटेल डर जाता है । वह तुरंत पच्चीस पैसे रोज के हिसाब से उनकी मजदूरी बड़ा देता है । इस घटना से मजदूर अचंभित होते है। उन्हें समझ में नहीं आता कि पटेल ने उनकी मजदूरी क्यों बढ़ायी ? क्योंकि उनके लिए तो " काला अक्षर भैस बराबर " है । ना मजदूर पढ़े-लिखे है ना ही चैती । आखिर वह उस पोस्टर का रहस्य जानने के लिए गाँव के गुरूजी के पास जाते हैं । तब उन्हें पता चलता है कि यह पोस्टर राघोबा नामक मजदूर युनियन के लिडर का है और उसमें मजदूरों की माँगे पूरी करने की बात छपी है । इससे ही पता चलता है कि चैती निम्न्वर्ग से ताल्लुक रखती है, जिन्हें अपने अधिकारों का पता है ना ही खुद के हो रहे शोषण का पता है ।

2:3 नायिकाओं का स्वरूप : प्रेमिका स्वरूप :

प्रेम यह ऐसी भावना है, जो सृष्टी के कण कण में बसी है। पशु, पंछी, पौधे आदि से लेकर मानव तक यह भावना हमें दिखाई देती है । यह शब्दों में व्यक्त न होकर महसूस की जाती है । प्रेम के भी अनेक रूप हैं।मानवी जीवन तो प्रेम, आपसी विश्वास और निष्ठा से ही निरंतर चलता आया है।यहाँ हमने प्रेम के अनेक रूपों में से नायिकाओं के प्रेम कीऔर उनके प्रेमिका स्वरूप का विवेचन कियाहै ।

नायिकाओं के प्रेमिका स्वरूप को

1) सफल प्रेमिका

2) असफल प्रेमिका

इन दो रूपों में विश्लेषित किया है ।

2:3 :1 सफल प्रेमिका :

शादी से पहले प्रेम करके अपने प्रेमी को अत्यंत प्रयासों से प्राप्त कर लेती है । फिर बाद में सभी की अनुमती प्राप्त कर लेती है, वह सफल प्रेमिका कहलाती है । शेष जी के केवल एक नाटक की नायिका सफल प्रेमिका है ।

" बंधन अपने अपने " की नायिका चेतना डॉ जयंत के निर्देशन में अनुसंधान का कार्य कर रही है । डॉ.जयंत प्रख्यात लिपीशास्त्री है । चेतना डॉ.जयंत के घर अक्सर आती -जाती है । उसी दौरान उसकी मुलाखात डॉ.जयंत के छोटे भाई अनादि से होती है । जल्द ही उनकी मुलाकातें प्यार में बदल जाती है । अनादि युनिवर्सिटी में पढ़ाता है । अनादि के जन्म के तुरंत बाद उसके माँ की मृत्यु हो जाती है और साल भर बाद पिताजी का भी देहांत हो जाता है । तब से डॉ.जयंत और अनादि ही रहते आये है । डॉ.जयंत ने विवाह न करने के कारण उनके घर में कोई स्त्री नहीं है । बस एक नौकर घर की देखभाल करता है । एक बार डॉ.जयंत बीमार पड़ते है तो चेतना उनकी देखभाल करती है क्योंकि उनका नौकर गाँव गया होता है । पर होता यह है कि डॉ.जयंत चेतना की सेवा को अपने प्रति प्यार समझ लेते है तथा चेतना की तरफ आकर्षित होते हैं । इसी कारण वे चेतना को खत लिखकर विवाह का प्रस्ताव रखते है । जब इस बात का पता अनादि को चलता है तो वह अपने प्यार की कुर्बानी देने का निर्णय लेता है । अनादि चेतना को अपने भाई से विवाह करने के लिए कहता है । पर चेतना इस बात को स्वीकार नहीं करती । उसे अनादि की अनंतकाल तक राह देखना मंजूर है पर डॉ.जयंत से शादी करना मंजूर नहीं। अतः वह अनादि को साफ -साफ इंकार कर देती है । साथ ही सब कुछ छोड़कर अपने घर जाने का निर्णय लेती है । तभी उनके बीच की सारी बाते डॉ जयंत सुन लेते है । उन्हें खुद की गलतफहमी तथा सच्चाई का पता चलता है । तब वह निर्णय लेते है कि वे हमेशा के लिए वॉशिंग्टन चले जायेंगे । यह निर्णय वह अनादि तथा चेतना को भी सुनाते है जिस वजह से चेतना और अनादि के प्यार में उभरी उलझन सुलझ जाती है । अतः चेतना अपने प्यार को खोते खोते पा लेती है । इसीकारण 'वह ' अंत में सफल प्रेमिका सिद्ध होती है ।

2:3 :2 असफल प्रेमिका :

ऐसी प्रेमिका जो शादी से पहले प्यार करती है मगर अपने प्रेमी को प्राप्त नहीं कर सकती और मजबूरन जिसे शादी किसी और से करनी पड़ती है या प्रेमी ही उसके प्यार को स्वीकार नहीं करता, वह नायिका असफल प्रेमिका कहलाती है । शेष जी के जिस नाटकों की नायिकाएँ अपने प्यार को प्राप्त करने में असफल हुई है उनका विश्लेषण यहाँ किया गया है -

" नई सभ्यता के नये नमुने " की नायिकाएँ स्मृति और धरणी सगी बहने हैं और अमीर बाप की लड़कियाँ है । स्मृति और धरणी के प्रेम स्वरूप पर रोशनी ड़ालते हुए डॉ.सुनीता मंजनबैल लिखती हैं," दोनों ही कृष्ण से प्रेम करती है किन्तु उनका प्रेम सच्चा नहीं है । गहराई और आत्मा के सुर से विहीन उनका प्रेम केवल एक आडंबर मात्र है ।" [19] कृष्ण शिक्षित मगर बेकार युवक है । वह स्मृति और धरणी से भी प्यार करने का केवल नाटक करता है क्योंकि उसे अपनी बीमार बहन के इलाज के लिए पैसों की सख्त जरूरत है ।ये पैसे उसे स्मृती और धरणी से मिल सकते हैं । लेकिन कृष्ण के इस झूठ को दोनों भी पहचान नहीं पाती । इतना ही नहीं कृष्ण भुलकुप्रसाद जो स्मृति से विवाह करना चाहता है उससे भी स्मृति को वश करने के उपाय बताकर पैसे लेता है । उसी तरह वह गगनबिहारी जो धरणी से विवाह करने की इच्छा रखता है उससे भी धरणी के बदले पैसे ऐंठता है । इस तरह कृष्ण ने पैसों के खातिर स्मृति, धरणी, भुलकुप्रसाद, और गगनबिहारी सभी को धोखे में रखा है ।

पर स्मृति और धरणी पिता से झगडकर सच्चे प्यार की दुहाई देते हुए कृष्ण से विवाह करने के लिए उसके घर पहुँचती हैं । तब दोनों में इस बात को लेकर झगड़ा शुरू होता है कि कृष्ण के साथ कौन विवाह करेगा ? कृष्ण उनका झगड़ा रोखते हुए उन्हें सुझाता है कि इस समस्या को सुलझाने के लिए तीनों ही जहर पीकर जीवन को समाप्त कर ले । वह तुरंत तीन गिलास में जहर ड़ालकर एक स्मृति को, दूसरा धरणी को दे, तिसरा खुद को रख लेता है । मगर सचमुच ही जब जान पे बन आती है तब स्मृति और धरणी दोनों ही जहर पीने से पीछे हटती हैं । इससे ही पता चलता है कि वह कृष्ण से सच्चा प्यार नहीं करती । लेकिन कृष्ण जहर पी लेता है, जिससे उसे चक्कर आने लगते है और उसका स्वर डूबने लगता है । यह देखकर स्मृति और धरणी घबरा जाती हैं और एक दूसरे को कोसने लगती हैं । तभी भुलकुप्रसाद और गगनबिहारी वहाँ आते हैं । स्थिति की नजाकत को देख कृष्ण अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त करता है। वह स्मृति और धरणी से वचन माँगता है कि वे क्रमशः भुलकुप्रसाद और गगनबिहारी से विवाह कर ले। तब स्मृति और धरणी कुछ नाराजी से इस प्रस्ताव को मंजूर करते हुए शादी के लिए हाँ कर देती हैं। तभी कृष्ण का नौकर वहाँ आकर कृष्ण को उसके बहन का तार दिखता है

तथा कहता है कि शोभा अच्छी हो गयी है और अस्पताल से घर आ रही है । यह खबर सुन कृष्ण आनंद से उछल पड़ता है । यह देखकर सब चौंक जाते हैं । तब कृष्ण सब को बताता कि, वह जहर नकली था । उसने स्मृति और धरणी से प्यार करने का नाटक भी अपनी बीमार बहन के इलाज के लिए किया था । इससे सारी सच्चाई सबके सामने आ जाती है । इस तरह स्मृति और धरणी का कृष्ण के साथ किया हुआ स्वार्थप्रेरित प्रेम असफल होता नजर आता है ।

"**खजुराहो का शिल्पी** " की नायिका अलका राजा यशोवर्मन की पालित कन्या है । वह शास्त्र,संगीत और नृत्य कला में निपुण है । अलका चित्रकला और मूर्तिकला सीखना चाहती है । वह राजा यशोवर्मन से इसके लिए अनुमति भी लेती है । मूर्तिकला को सीखने के लिए उसी शिल्पी मेघराज आनंद के पास जाती है जिसे बाद में राजा यशोवर्मन "मोह के क्षण" को जीतने की प्रेरणा देनेवाले मंदिर के निर्माण के लिए चुनते है । कवि मेघराज आनंद अलका को ही प्रतिदर्श के रूप में राजा यशोवर्मन से माँगता है । राजा यशोवर्मन तुरंत इसके लिए अनुमति दे देता है । लेकिन प्रतिदर्श के रूप में शिल्पी के साथ काम करते करते अलका शिल्पी से प्यार करने लगती है । वह उस पर मुग्ध हो जाती है । मगर शिल्पी मेघराज आनंद इस संसार से मोह त्याग चुका है । वह अलका के मोह में बँधना नहीं चाहता । इसी कारण वह अलका से कहता है --" अलका मैं विवश हूँ । मैं फिर से इस संसार में नहीं लौट सकता ।"[20] निर्मोही शिल्पी अलका का प्यार अस्वीकार कर देता है। अतः अलका ऐसी असफल प्रेमिका है जो अपने ही प्यार के द्वारा छली गयी है ।

हमें " **कालजयी** " नाटक में दिखाई देता है कि नायिका पुरबी और वसुमित्र एक दूसरे से बेहद प्यार करते हैं । दोनों " प्रजातंत्र " दल के सदस्य है जो कालजयी के अन्यायी शासन को खत्म करने के लिए जन्मा है । पुरबी जितनी सुंदर है, उतनी ही चतुर । पुरबी को कालजयी के अमरत्व का रहस्य जानने का काम सौंपा गया है । जिसके तहत पुरबी को कालजयी जैसे सत्ता में मदमस्त राजा की रानी बनना पड़ता है । इतना ही नहीं जब वसुमित्र कालजयी के मदिरा में विष मिलाते वक्त पकड़ा जाता है तो उसे अपने ही हाथों दंडित करना पड़ता है । तब पुरबी अपनी हाथों से वसुमित्र को विष का प्याला पिलाती है इससे वसुमित्र की मौत हो जाती है । यह केवल इसलिए की कालजयी उस पर विश्वास करने लगे और किसी तरह उसके अमरत्व का राज खुल जाये । पुरबी को कर्तव्य निभाने के लिए अपने प्यार को मौत के घाट उतारना पडता है । वह अपने प्यार को देश की स्वतंत्रता के लिए कुर्बान कर देती है । अतः हमें नजर आता है कि पुरबी असफल नायिका होते हुए भी देशप्रेम की मिसाल है ।

इसके बिल्कुल अलग बात " **घरौंदा** " में नजर आती है जिसकी नायिका छाया उसी की कंपनी में काम करनेवाले सुदीप से प्यार करती है। दोनों शादी भी करना चाहते हैं। पर उनका अपना घर ना होने के कारण दोनों शादी नहीं कर पा रहे है। महानगरों में दिन -ब -दिन घरों की समस्या बिकट होती जा रही है। छाया और सुदीप दोनों छोटी छोटी जरूरतों को मारकर घर के लिए पैसे बचाने लगते हैं मगर पहली बार बिल्डर पैसे खा जाता हैं। दूसरी बार छाया का भाई अमरिका जाने के लिए जमा किये पैसे ले जाता हैं। तो तीसरी बार मकान मालिक पैसा हड़प जाता हैं। इन आघातों से सुदीप का हौसला टूट जाता हैं। इसी दौरान उनके कंपनी का मालिक मि.मोदी छाया के सामने शादी का प्रस्ताव रखता है। तब छाया उसे अस्वीकार करके नौकरी छोड़ने का निर्णय लेती हैं। पर आर्थिक कठिनाईंओं से बाज आया सुदीप छाया को मि.मोदी का प्रस्ताव स्वीकार करने के लिये कहता हैं कि "आखिर जब दूर रहना ही हमारी नियति हैं, तो मैं सोचता हूँ ------ तो हम भी उसी रास्ते से क्यों न चले ? जिसे शॉर्टकट कहते है। मैं तुम्हे कभी मकान नहीं दे सकूँगा। मोदी तुम्हें सब कुछ दे सकता हैं। केवल हाँ कहने की देर है। हम दोनों क्यों यातना भोगे ? "[21] लेकिन छाया को इस तरह का शॉर्टकट. बिल्कुल पसंद नहीं। उसे सुदीप का यह कहना अच्छा नहीं लगता। वह इन मुश्किलों से भी रास्ता ढूँढने की ख्वाईश रखती है। पर सुदीप हार मानने लगता है। वह टूटता हुआ नजर आता है। तब सुदीप के खातिर छाया मि.मोदी का प्रस्ताव स्वीकार कर मिसेस मोदी बन जाती है। अतः यहाँ पर आर्थिक कठिनाईंओं के कारण एक छत और चार दीवारों के अभाव में छाया ने अपने प्यार को खो दिया है।

2:4 नायिकाओं का स्वरूप : आर्थिक स्वरूप :

समाज चाहे ग्रामीण हो, शहरी हो या आदिम उसका विकास, तरक्की उसकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है। समाज के विकास में अर्थ याने पैसा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका बजाता है। उसी तरह समाज में स्त्री का स्थान उसकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है। जिस समाज में स्त्री आर्थिक रूप से सक्षम हो, उस समाज में उसका स्थान भी ऊँचा होता है। उसे अनेक सुविधाएँ अपने आप ही प्राप्त हो जाती है। जैसे शिक्षा प्राप्त करना, अपने या अपने घर से संबंधित निर्णय लेना, नौकरी करना आदि हक प्राप्त होते है। पर इन सुविधाओं के साथ साथ उसे अपने घर तथा समाज दोनों तरफ की जिम्मेदारियों को बखूबी निभाना पड़ता है। इसके बारे में प्रभा वर्मा लिखती है " वेतनभोगी नारी को परिवार के कार्यो एवम् उत्तरदायित्वों को उतना ही कुशलता से निभाना पड़ता है। जितना कि एक घरेलू स्त्री निभाती है।"[22] अतः उसे स्वतंत्रता, अधिकार और सुविधाओं के साथ अपनी जिम्मेदारियाँ भी पूरी करनी पड़ती है।

यही बातें हमें शेष के नाटकों की नायिकाओं के जरिए देखने को मिलती है । इसके लिए दो कोटियाँ निर्धारित की है ।

1) स्वावलंबी नायिका ।

2) परावलंबी नायिका ।

इन दो रूपों में नायिकाओं के आर्थिक स्वरूप का विवेचन किया गया है ।

2:4 स्वावलंबी नायिका :

इसमें शेष के उन नाटकों की नायिकाओं का विवेचन किया गया है, जो खुद कोई काम करके अर्थार्जन करती है । आर्थिक रूप से दूसरों पर निर्भर नहीं है । वे आर्थिक रूप से सक्षम और स्वावलंबि है ।

शेष के " **बिन बाती के दीप** " की नायिका विशाखा अत्यंत प्रतिभावान लेखिका है । कॉलेज के दिनों नें उसकी आँखों की रोशनी चली गयी है । शिवराज और विशाखा कॉलेज के दिनों से ही एक दूसरे को जानते थे । शिवराज विशाखा के अंधी होने के बावजूद उससे शादी कर लेता है । शिवराज औसत श्रेणी का कवि है । शिवराज विशाखा का लिखा पहला उपन्यास अपने नाम से छपवाता है । वह उपन्यास इतना लोकप्रिय हो जाता है कि शिवराज हिंदी का एक श्रेष्ठ लेखक बन जाता है । लेकिन उसकी खबर वह विशाखा को होने नहीं देता । आखिल भारतीय प्रसिद्धि की महत्वाकांक्षा शिवराज को विशाखा से विश्वासघात करने के लिये मजबूर करती है । वह विशाखा के इर्द -गिर्द बनावटी संसार रचता है, जिस में विशाखा को पाठकों के उसके नाम आये जाली प्रशंसा के पत्र पढ़कर सुनाये जाते है, टेपरिकॉर्डर से रेडिओ पर उसके सम्मान की जाली वार्ता सुनाई जाती है। विशाखा पूर्णरूप से शिवराज के इन कुटिल कारनामों से अनभिज्ञ हैं ।

विशाखा के लिखे उपन्यासों को प्रकाशित करना तथा उसके द्वारा आये हुये पैसों का सारा व्यवहार देखना यह काम शिवराज ही करता है । अतः विशाखा आर्थिक रूप से स्वावलंबी होते हुए भी अपने अंधत्व के कारण शिवराज के सहारे की मोहताज दिखायी देती है ।

" **घरौंदा** " की छाया बंबई जैसे शहर में रहनेवाली मध्यमवर्गीय युवती हैं । उसके घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है । साथ ही उनके घर में जगह की भी कमी है । चाल के एक कमरे में छ लोग रहते है । घर का हर सदस्य चाहता है कि दूसरा ज्यादा से ज्यादा घर से बाहर रहे । लोगों का जीवन अर्थ पर किस तरह आश्रित होता है इस पर प्रकाश ड़ालते हुए डॉ. सुरेश गौतम और वीणा गौतम लिखती है -" अर्थ पर ही जनसामान्य के जीवन की धुरी घूमती है और जब आधार ही कमजोर हो तब

संतुलन की आशा नहीं की जा सकती ।"[23] मगर संघर्षशील छाया मुसीबतों से जूझने में विश्वास रखती है । अपने घर की आर्थिक स्थिति बेहतर करने के लिये छाया " मोदी ऐंड कंपनी" में नौकरी करने लगती है जिससे घर का आर्थिक भार कुछ कम हो । अतः छाया आर्थिक रूप से स्वावलंबी है ।

" अरे ! मायावी सरोवर " की नायिका रानी सुजाता राजा इल्वलु की पत्नी है । राजा -रानी की पुरानी कथा द्वारा नाटककार ने नौटंकी की लोकनाट्य शैली में पुरूष जीवन के अधूरेपन और नारी के वैविध्यपूर्ण जीवन को उदघाटित किया है ।" [24] राजा इल्वलु रोजमर्रा की जिंदगी, घर -गृहस्थी के झंझट तथा राजकारोबार से बेचैन हो गया है । उसके सामने यह प्रश्न है कि, अब वह क्या करे ? लेकिन रानी सुजाता को अपनी घर -गृहस्थी से फुरसत ही नहीं । रानी सुजाता राजा को शबरीनरायन तीर्थ जाने की सलाह देती है। राजा रानी सुजाता को भी साथ ले जाना चाहता है मगर रानी गृहस्थी की चिंता के कारण इंकार देती है । लेकिन राजा के आग्रह के कारण वह राजा के साथ तीर्थ यात्रा पर निकल पड़ती है ।

रास्ते में वे विचित्र वन पहुँच जाते है ,जहाँ की हर चीज विचित्र है । चलते -चलते राजा-रानी ऐंद्रजालिक सरोवर के पास आते हैं ।राजा रानी के मना करने के बावजूद सरोवर में नहाता हैं ओर स्त्री बन जाता है । स्त्री बना राजा इल्वलु चेतना नगर लौटना नहीं चाहता । वह रानी सुजाता को चेतना नगर वापस भेजकर अपनी यात्रा जारी रखता है रानी सुजाता चेताना नगर आकर राज्य का कार्यभार कुशलता से चलाती हैं । अतः रानी सुजाता पहले अपने घर -गृहस्थी को सँभालते हुए हमें नजर आती हैं । पर जब परिस्थिति वश उसपर राज्य कार्यभार चलाने की जिम्मेदारी आ जाती हैं, तो यह जिम्मेदारी वह कुशलता से निभाती है । इससे रानी सुजाता के स्वावलंबी होने का पता चलता है ।

" रक्तबीज " नाटक के पूर्वार्ध की नायिका सुजाता मि.शर्मा की पत्नी हैं । सुजाता "मालिश तेल और दंतमंजन " बनानेवाले कंपनी में काम करती है । अपने कमाई के सारे पैसे वह विधवा भाभी के बच्चों के पढ़ाई के लिये भेज अपनी इंसानियत का परिचय देती है । सुजाता का पति अतिरिक्त महत्वाकांक्षा रखनेवाला इंसान हैं । वह जल्द से जल्द अमीर इंसान बनना चाहता है और अपनी मनोकामना की पूर्ति वह अपनी पत्नी को इस्तेमाल कर के करना चाहता है । मि. शर्मा के व्यक्तित्व को उजागर करती हुई डॉ.गिरिश रस्तोगी लिखती है,"हमारी सामाजिकता के अनुरूप उसका अपना कोई व्यक्तित्व नहीं है, वह मात्र एक मोहरा है ।" [25]मि.शर्मा भी इसी विचार इंसान हैं । वह अपने बॉस को पार्टी के बहाने घर बुलाता है । पत्नी सुजाता को उसकी इच्छाओं के विरूद्ध ऐसी -ऐसी हरकतें करने को बाध्य करता है जिससे कि माथुर खुश हो जाये और उसे प्रमोशन दे दे । मि.माथुर शर्मा को प्रमोशन तो देता है ,साथ ही सुजाता को अपनी स्टेनो भी बनाता है । अतः सुजाता आर्थिक

रूप से स्वावलंबी होकर भी हमें अपने मन के अनुसार निर्णय लेने और उसके अनुसार जीने में दुर्बल नजर आती है।

" **पोस्टर** " की नायिका ' चैती ' सीधी -साधी आदिवासी स्त्री है। चैती नवविवाहिता है। उनके गाँव का जनजीवन पिछड़ा हुआ है। वहाँ जीवन मँहगा हैं, लेकिन मौत सस्ती है। गाँव का जमीनदार पटेल गाँव का मुखिया है। गाँव के मजदूरों को वह केवल एक रूपया मजदूरी देता हैं। गाँव के लोग पटले के खेती - कारखाने में जंगल से मिलनेवाले हर्रा, बेहडा, चिरौंजी, गोंद आदि की छटाई और सफाई का काम करते हैं। जिससे उन्हें दो जून रोटी बड़ी मुश्किल से मिलती हैं। चैती का पति कल्लू पटले के यहाँ काम करता हैं। चैती भी कल्लू के साथ -साथ पटेल के यहाँ काम करने के लिये जाती है। अतः चैती भी काम कर अपनी गृहस्थी में अपना हाँथ बँटाती हुई दिखाई देती हैं।

"**राक्षस**" नाटक की नायिका श्वेतादेवी उदार मन की स्त्री हैं। राक्षस जागृति नगर,विश्वास नगर, आजाद नगर,दया नगर, श्रद्धा नगर, करूणा नगर आदि 80 गाँवो को निगल चुका हैं और श्वेतादेवी के गाँव की ओर आ रहा है। गाँव के सब लोग राक्षस से भयभीत हैं। उनके पास दो ही रास्ते हैं, एक राक्षस से मुकाबला करना या उससे समझौता करना। तब गाँव के सब लोग राक्षस से समझौता करने का फैसला करते हैं। तो इस फैसलें के खिलाफ केवल एक आवाज उठती है, वह है श्वेतादेवी की। श्वेतादेवी गाँव के लोगों को राक्षस से लड़ने के लिये आव्हान करती हैं। लेकिन गाँव के लोग उसे ही अध्यक्षा बनाकर हर रोज एक व्यक्ति को राक्षस के पास भेजने की जिम्मेदारी सौंपते हैं। लेकिन जब गाँव के पंचायत के सदस्य और बच्चों के अलावा कोई नहीं बचता तब श्वेतादेवी बच्चों को राक्षस के पास भेजने से इंकार करती है। वह गाँव के युवाओं में संगठन निर्माण करती है। उन्हें लड़ना सिखाती है, उनका उत्साह और साहस बढ़ती है। जिस कारण युवाशक्ति द्वारा ही राक्षस का प्रतिनिधि रणछोड़दास की मृत्यु हो जाती है। इससे श्वेतादेवी की दृढता और असीमित साहस के दर्शन होते है।

"**चेहरे**" की नायिका अध्यापिका पहले वेश्या व्यवसाय कर अपना जीवन गुजारती थी। जब समाजसुधारक भरोसे जी से उसकी मुलाकात होती है। वो उसे वेश्यालय से निकालना चाहते हैं, तब वह सहर्ष उनके साथ निकल पड़ती है तथा स्कूल में अध्यापन का कार्य करने लगती है।

2:4:2 परावलंबी नायिका :

शंकर शेष के नाटकों की ज्यादातर नायिकाएँ विवाहित है। अपना घर संसार सँभालनेवाली और उनकी खुशियाँ भी घर से जुड़ी हुई दिखायी देती है। आर्थिक रूप से भले ही वह परावलंबी हो मगर घरेलू जिम्मेदारियाँ बखूबी निभाती हुई नजर आती है। साथ ही साथ " नई सभ्यता के नये नमुने

" की स्मृति और धरणी, " बंधन अपने अपने ' की चेतना और ' खजुराहो का शिल्पी ' की अलका ये अविवाहोत नायिकाएँ आर्थिक रूप परावलंबी नजर आती है । अतः जो नायिकाएँ आर्थिक रूप से खुद कमाती नहीं है उन्हें परावलंबी नायिकाओं की कोटि में रखा गया है ।

शेष के " **मूर्तिकार** " की ललिता संघर्षशील गृहिणी और सच्चे रूप में अर्धांगिनी है । उसके पति शेखर का एक मात्र लक्ष्य है 'कला की साधना '। वह कला को व्यवहार से बढ़कर मानता है । उसके व्यक्तित्व के बारे में प्रकाश डालते हुए डॉ. प्रकाश जाधव लिखते है " एक बार वह मर जाना पसंद करेगा, परंतु अपने कला के आदर्शों से नहीं गिर सकेगा " [26] मगर आज की दुनिया में सच्चे कलाकारों की कद्र तो दूर उन्हें अच्छा सामान्य जीवन भी नसीब नहीं होता । ललिता के घर में भी दो वक्त की रोटी मिलना भी दूभर हो गया है । लेकिन शेखर को इस बात की फिक्र नहीं है। मगर ललिता तो जिंदगी की भौतिक जरूरतों से अंनजान नहीं रह सकती । इसी कारण वह अपने पति को उसकी जिम्मेंदारियों से अवगत कराते हुए कहती है --" फिर तुम केवल चित्रकार या मूर्तिकार ही नहीं हो, तुम एक गृहस्थ भी तो हो तुम्हारी पत्नी है, तुम्हारी जवान अविवाहित बहन है, इसके साथ रोज --रोज की जरूरतें है ----" [27] ललिता चाहती है कि अपने पति को अपने सिद्धांत ना छोड़ना पड़े पर घर की तरफ उसकी जो जिम्मेंदारियाँ है उसे भी वह नकार नहीं सकती । अतः उसे पूरा करे यह उसकी ख्वाईश है । ललिता आर्थिक संकट की स्थिति में अपने पति का पूरा -- पूरा साथ निभाती है । उसे इस स्थिति से लड़ने के लिए प्ररित करते हुए ललिता कहती है " दिल्ली में कुछ ही दिनों बाद एक प्रदर्शनी हो रही है, उसमें अपनी कलाकृति भेजो ।" [28] अतः ललिता आर्थिक दृष्टी से परावलंबी है, मगर अपने पति को हर स्थिति में सहयोग देती हुई नजर आती है ।

"**रत्नगर्भा** " की नायिका इला अपने सौंदर्य प्रेमी पति की प्यारी पत्नी है । एक दुर्घटना में उसका चेहरा झुलस जाने से वह कुरूप बन जाती है । लेकिन इस दुर्घटना की खबर अपने पति को इसलिए नहीं देती कि सुनील यह खबर सुन अध्ययन अधूरा छोड़ ना दे । जब सुनील विदेश से अध्ययन पूरा करके आनेवाला होता है तो इला के सामने समस्या खड़ी होती है की वह अपने पति का सामना कैसे करे । वह कुरूप चेहरा लेकर जीना नहीं चाहती थी मगर उसे आशा है कि सुनील उसे अंतर नहीं देगा । इसी कारण वह सुनील से कहती है,"मेरा चेहरा विकृत होते ही मैं आत्महत्या कर लेना चाहती थी, पर आशा के एक पतले धागे ने मुझे जिंदा रखा है सुनील । आज मैं सौंदर्य की मूर्ति नहीं, उसके प्रेत के रूप में तुम्हारे सामने खड़ी हूँ । अब यदि तुम्हारा अंतःकरण मुझे स्वीकार करता हो तो अपना लो,नहीं तो ठोकर मार दो । " [29] इस तरह इला के लिए उसका पति ही सब कुछ है । अतः आर्थिक रूप से परावलंबी इला अपने पति में ही अपना सहारा ढूँढती हुई नजर आती है ।

" **नई सभ्यता के नये नमुने** " की नायिकाएँ स्मृति और धरणी बहने है और धनी व्यापारी की बेटियाँ हैं । दोनों भी धनी बाप की राह भूली लड़कियाँ है । पिता के पैसे क्लबों में जाकर उड़ाना, रात देर तक घर से बाहर रहना, सुबह देर से उठना, पाश्चात्य संस्कृति के कपड़े पहनना आदि उनके शौक है । अतः आर्थिक रूप से परावलंबी स्मृति और धरणी अपने पिता के कमाए हुए पैसे मन माने ढंग से खर्च करती हुई दिखाई देती है ।

" **तिल का ताड़** " की नायिका मंजू अजय की पत्नी है जो मिल में काम करता है । मजदूर आंदोलन में भाग लेने के कारण एक बार अजय पकड़ा जाता है । तब मंजू अकेली पड़ जाती है । आर्थिक कठिनाई के कारण वह नौकरी की तलाश में निकल पड़ती है और भटकती हुई एक नगर में पहुँच जाती है । वहाँ गुंडों के चंगुल में फँस जाती है । तब प्राणनाथ नामक युवक उसे बचाकर अपने घर ले आता है । प्राणनाथ ऐसा इंसान है जो खुद मुसीबत में फँसा हुआ है । किराये पर मकान लेने के लिए प्राणनाथ ने मकान मालिक से झूठ बोला था क वह शादी -- शुदा है । अब उसे मकान मालिक ने उसकी बीवी को लाने के लिए कहा है । वह मंजू से उसकी बीवी बनने का नाटक करने के लिए कहता है । असहाय मंजू भी उसकी हाँ में हाँ भर देती है क्योंकि उसके पास भी ना रहने के लिए घर है ना पैसे । अतः आर्थिक रूप से परावलंबी होने के कारण मंजू को परिस्थितिवश विवाहीत होते हुए भी दूसरे की बीवी होने का नाटक करना पड़ता है ।

" **बाढ़ का पानी** " की नायिका लछमी अनपढ़ देहाती स्त्री है । नर्मदा नदी के किनारे बसे उसके गाँव में अधिक बरसात के कारण बाढ़ आयी है । उसके घर में इतनी गरीबी है कि बारिश के कारण कपड़े गीले होने पर दूसरे कपड़े पहनने को नहीं है । फिर भी लछमी अपनी गृहस्थी से खुश है । उसका पति छीतू चप्पलें बनाता है । जाति से चमार होते हुए भी उन्होंने अपने बेटे नवल को पढ़ाया है । बाढ आने पर लछमी और छीतू गाववालों की हर प्रकार से सहायता करते है । इतनी गरीबी में भी लछमी गाँववालों को अपने घर में जगह देना, खाना देना आदि सभी प्रकार की सहायता करती है । जब लछमी को अस्पृश्य जान उनके घर शरण लिये हुए पंडित खाना खाने से इंकार कर देते है तो लछमी अपने पति छीतू से कहती है, " फिर मैं भी नहीं खाऊँगी । जब तक पंडित जी भूखे रहेंगे, तब तक इस घर क कोई भात नहीं खाएगा । नवल भी नहीं । हम मेहमान को भूखा रखकर नरक जाना नहीं चाहते । "[30] इस तरह अनपढ़, देहाती लछमी आर्थिक रूप से भले ही परावलंबी हो मगर अपनी घर के प्रति जिम्मेदारियाँ और समाज के प्रति, लोगों के प्रति अपने दायित्व को बखूबी समझती है ।

" **बंधन अपने अपने** " की चेतना डॉ जयंत के निर्देशन में पी एच.डी. कर रही है । वह पिछले तीन वर्षों से शोधकार्य कर रही है । उच्चशिक्षित चेतना निड़र, साहसी, आत्मविश्वासी लड़की है ।

उसकी पढाई शुरू होने के कारण वह नौकरी या अन्य कोई काम करती नहीं नजर आती । अतः वह आर्थिक रूप से अपने घरवालों पर निर्भर है ।

" **खजुराहो का शिल्पी** " की नायिका अलका चंद्रात्रेय वंश के राजा यशोवर्मन की पालित कन्या है । राजा यशोवर्मन ने उसे शास्त्र, संगीत, नृत्य आदि कलाओं की शिक्षा दी है । वह यशोवर्मन और रानी पुष्पा की चहेती बेटी है, जिसकी हर माँग पूरी की जाती है । वह राजकुमारी कहलाने की अधिकारिणी है । आर्थिक रूप से परावलंबी होते हुए भी राज वैभव में पली बड़ी अलका को धन, दौलत आदि किसी बात की कमी नहीं है ।

" **एक और द्रोणाचार्य** " दोहरे कथानकवाला नाटक है । इसके एक कथा की नायिका लीला प्रो अरविंद की पत्नी है तो दूसरे कथा की नायिका कृपी गुरू द्रोणाचार्य की पत्नी है । दोनों भी अभावग्रस्त गृहस्थी से तंग आ गयी है । दोनों भी सुविधाओं की लालसा रखनेवाली औरतें है । लीला और कृपी अपने पति अरविंद और द्रोणाचार्य को सुविधाभोगी बनने के लिए प्रवृत्त करती है । जिस कारण अरविंद को चन्दू पर और द्रोणाचार्य को एकलव्य पर अपना पद कायम रखने के लिए अन्याय करना पड़ता है । अतः आर्थिक रूप से परावलंबी लीला और कृपी सुविधाओं को कायम रखने के लिए अपने पतियों को गलत रास्ते पर ले जाती हुई दिखाई देती है ।

" **कालजयी** " की नायिका पुरबी ' प्रजातंत्र दल ' की स्वयंसेविका है जो कालजयी राजा की सौ वर्षों से चली आ रही अत्याचारी सत्ता को खत्म करने के लिए निर्माण हुआ है । पुरबी साहसी, निड़र युवती है । उसे कालजयी के अमरत्व का रहस्य जानने का काम सौंपा गया है । जिसके तहत पुरबी को कालजयी की रानी बनकर उसे सर्वस्व अर्पण करना पड़ता है । इतना ही नहीं अपने प्रेमी वसुमित्र को अपने ही हाथों मौत के घाट उतारना पड़ता है । देश के लिए, स्वाधीनता के लिए किया गया पुरबी का यह त्याग सचमुच ही अभूतपूर्व है । वह वैद्यराज मृत्युंजय से भी प्यार का नाटक करके कालजयी के अमरत्व का रहस्य जान लेती है । आर्थिक दृष्टि से परावलंबी पुरबी अपने चातुर्य के कारण कालजयी जैसे धूर्त राजा का अमरत्व जानने में सफल होती है ।

" **रक्तबीज** "नाटक के उत्तरार्ध की नायिका ललिता मेघावी वैज्ञानिक डॉ.शंतनु की पत्नी है। ललिता का पति अपने रिसर्च के जरिए संसार में नाम कमाना चाहता है । उसके लिए अपने गृहस्थी से ज्यादा जरूरी है अपना काम । ललिता शादी के बाद पति की इस महत्वकांक्षा को तुरंत जान जाती है । वह पति के काम में पूरा सहयोग देने का निश्चय करती है । वह कभी पति को गृहस्थी की जरूरतों से परेशान नहीं करती । इतना ही नहीं ग्यारह साल से उसने अपनी मातृत्व की इच्छा को भी जाहिर नहीं

होने दिया है । इससे पता चलता है कि ललिता आर्थिक दृष्टि से परावलंबी है मगर अपने पति के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है । इसी कारण शंतनु की इच्छा को उसने अपनी इच्छा माना लिया है ।

" **कोमल गांधार**" की नायिका गांधारी का विवाह धृतराष्ट्र से अंधेपन की जानकारी दिये बगैर विश्वासघात से किया जाता है । इस शादी से गांधारी के स्वप्नों पर बिजली गिर जाती है, इस बात का वर्णन करते हुए डॉ. रमेश गौतम लिखते है," पुरूष वर्ग ने षड्यंत्र करके गांधारी के कोमल स्वप्नों पर गाज गिराई और धृतराष्ट्र की अंधी आँखो में ही उसके संसार को समेटकर रख दिया । "[31] लेकिन गांधारी यह अन्याय मंजूर नहीं करती वह इसके खिलाफ विद्रोह करना चाहती है । उसका यह कहना " ये लोग अब समझ ले, स्त्री एक खाली जमीन नहीं है जिसे आसानी से रौंद कर शांति से जिया जा सके । कुरूवंश को अपने इस अन्याय की कीमत चुकानी होगी ।"[32] इस बात को जाहिर करता है कि इस तरह अपने पर हुए अन्याय का विरोध करने के लिए वह सदा के लिए अपनी आँखो पर पट्टी बाँध लेती है । तथा संसार के प्रति अपने वैवाहिक जीवन के प्रति क्षोभ व्यक्त करती है । अतः आर्थिक रूप से परावलंबी होकर भी गांधारी अपने अस्तित्व के प्रति, स्वाभिमान के प्रति सजग दिखाई देती है ।

निष्कर्षः

शंकर शेष के नाटकों की नायिकाओं का शैक्षिक, वर्गीय, प्रेमिका और आर्थिक दृष्टि से विवेचन कर हम यह कह सकते है कि शेष जी के नाटकों में नायिकाओं के विविध रूप नजर आते हैं।शैक्षिक दृष्टी से विवेचन करने पर पता चलता है कि शेष के नाटकों की नायिकाएँ शिक्षित और अशिक्षित दोनों रूपों में मिलती है । जिसके जरिए स्त्री के शिक्षित होने के महत्व को बताने का प्रयास किया है । वर्गीय दृष्टी से अध्ययन करने पर पता चलता है कि उनकी नायिकाएँ सभी वर्गों से संबंधित है । जिसके द्वारा उन्होंने उच्चवर्ग,मध्यवर्ग और निम्नवर्ग में स्थान रखनेवाली स्त्रियों की जिंदगी के हर पहलू को उद्घाटित करने की कोशिश की है । तथा उनकी समस्याओं का उद्घाटन किया है । नायिकाओं के प्रेमिका स्वरूप को देखने के बाद पता चलता है कि शेष ने प्रेम जैसी तरल भावना का बखूबी चित्रण अपने नाटकों में किया है । तथा प्रेम में निर्माण होनेवाली अनेक बाधाओं का भी चित्रण किया है । आर्थिक दृष्टि से नायिकाओं के स्वावलंबी औरे परावलंबी इन दो स्वरूपों में अध्ययन करने के बाद नजर आता है कि शेष ने तत्कालीन समाज में होनेवाले स्त्री के स्थान का यथार्थ चित्रण किया है । जिसके जरिए समाज को स्त्री शक्ति के प्रति जागृत करने का प्रयास किया है । तथा खुद स्त्री को भी उसकी शक्ति तथा सत्व के प्रति सजग किया है । जिसके जरिए नारी को अच्छा जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है ।

द्वितीय अध्याय

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.डॉ.पुष्पलता	" रीतिकालीन शृंगारिक सत्सईयों का तुलनात्मक अध्ययन "	पृष्ठ 91
2. डॉ.सूर्यकांत शर्मा	" हिंदी नाटक में पात्र कल्पना और चरित्र चित्रण "	पृष्ठ 28
3. डॉ. नागेंद्र	" रीतिकाव्य की भूमिका "	पृष्ठ 139
4. डॉ. शांति मलिक	" नाट्य सिद्धांत विवेचन "	पृष्ठ 69
5. सं. डॉ. विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2	पृष्ठ - 61
6 सं. डॉ .विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2	पृष्ठ - 85
7 सं.डॉ. विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2	पृष्ठ - 31
8 सं.डॉ. विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2	पृष्ठ - 266
9 सं.डॉ. विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2	पृष्ठ - 73
11. डॉ.अर्जुन चव्हाण	" रार्जेद्र यादव के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय जीवन "	पृष्ठ - 72
10 डॉ. रमेश गौतम	" मिथक और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक "	पृष्ठ - 148
12 डॉ. वीणा गौतम	" आधुनिक हिंदी नाटकों में मध्यमवर्गीय चेतना "	पृष्ठ - 18
13 डॉ. वीणा गौतम	" आधुनिक हिंदी नाटकों में मध्यमवर्गीय चेतना "	पृष्ठ - 19
14 डॉ.श्रीमती पिंपलापुरे	" मोहन राकेश का नारी संसार "	पृष्ठ - 224
15 सं.डॉ. विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2	पृष्ठ - 133
16. डॉ.चमनलाल गुप्ता	" यशपाल के उपन्यास : सामाजिक कथ्य"	पृष्ठ - 64
17. माधान्ता ओझा	" हिन्दी समस्या नाटक "	पृष्ठ - 162
18. सं.डॉ. विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2	पृष्ठ - 114
19. डॉ.सुनीता मंजनबैल	" शंकर शेष व्यक्तित्व एवम कृतित्व"	पृष्ठ - 37
20. सं.डॉ. विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2	पृष्ठ - 117
21. सं.डॉ. विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2	पृष्ठ - 345
22. प्रभा वर्मा	" हिन्दी उपन्यास सामाजिक परीवर्तन की प्रक्रिया और स्वरूप "	पृष्ठ - 240

23. डॉ.सुरेश गौतम " राजपथ से जनपथ नटशिल्पी शंकर शेष " पृष्ठ - 127
डॉ. वीणा गौतम

24. डॉ.रमेश गौतम " मिथक और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक" पृष्ठ - 152

25. गिरिश रस्तोगी " समकालीन हिंदी नाटककार" पृष्ठ - 122

26. डॉ.प्रकाश ज़ाधव " डॉ.शंकर शेष का नाटक साहित्य" पृष्ठ - 28

27. सं.डॅ. विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2 पृष्ठ - 61

28. सं.डॅ. विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2 पृष्ठ - 96

29. सं.डॅ. विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2 पृष्ठ - 20

30. सं.डॅ. विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2 पृष्ठ - 139

31. डॉ.रमेश गौतम " मिथक और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक" पृष्ठ - 147

32. सं.डॅ. विनय " शंकर शेष रचनावली " खंड :- 2 पृष्ठ - 433